214hi09

9

मांग

हम पहले ही पाठ 2 में आवश्यकताओं के बारे में पढ़ चुके हैं। इन आवश्यकताओं की संतुष्टि करने के लिये, हम बाजार से वस्तुओं एवं सेवाओं का क्रय करते हैं। हम वस्तुओं एवं सेवाओं को भिन्न-भिन्न कीमते चुका कर खरीदते है। आज कल बाजार अनेक प्रकार की वस्तुओं से भरा पड़ा है। इसलिये किसी वस्तु को खरीदने से पहले हमें चयन करना पड़ता है। लेकिन केवल चयन करना अथवा किसी विशेष वस्तु को क्रय करने के लिए चुनना ही काफी नहीं है। जब हम बाजार जाते है तो हम कुछ मुद्रा अपने साथ ले जाते हैं जिसे हम वस्तु और सेवाओं के खरीदने में प्रयोग करते हैं। एक उपभोक्ता के रूप में हम वस्तुओं अथवा सेवाओं की कितनी मात्रा अथवा उनके किस संयोग का क्रय करेंगे, यह हमारे पास मुद्रा की मात्रा, कीमत जो हमें चुकानी है, वस्तुओं की हमारी रूचि आदि पर निर्भर करता है। इन सभी चीजों को मांग के अध्ययन में सम्मिलित किया जाता है जो बाजार में हमारे उपभोक्ता के रूप में व्यवहार को प्रदर्शित करता है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप :

- मांग की अवधारणा की व्याख्या कर पायेंगे;
- किसी वस्तु की व्यक्तिगत मांग तथा बाजार मांग में अन्तर समझ पायेंगे;
- मांग को प्रभावित करने वाले कारकों को समझ पायेंगे;
- मांग के नियम को बता पायेंगे तथा कीमत और मांगी गई मात्रा में सम्बन्ध स्थापित कर पायेंगे;
- व्यक्तिगत मांग वक्र की रचना कर पायेंगे;
- व्यक्गित मांग वक्र के आकार की व्याख्या कर पायेंगे।

9.1 मांग का अर्थ

मान लजिये, वर्षा गत सप्ताह बाजार गई थी और अपने लिये उसने निम्नलिखित खरीदारी की।

1. 1 कि.ग्रा. चावल, 25 रु. प्रति कि.ग्रा. कीमत पर
2. 0.5 कि.ग्रा. अरहर की दाल, 68 रु. प्रति कि.ग्रा. कीमत पर
3. 1 कि. ग्रा. गेहूँ का आटा, 24 रु. प्रति कि.ग्रा. कीमत पर
4. 2 कि.ग्रा. आम, 50 रु. प्रति कि.ग्रा. कीमत पर

जब भी कोई बाजार में किसी वस्तु का क्रय करता/करती है, उसे उस वस्तु के लिये दी हुई कीमत चुकानी पड़ती है तथा तदनुसार, एक दी गई अवधि में उपभोग के लिये वह उसकी एक निश्चित मात्रा खरीदता/खरीदती है, जैसा कि वर्षा ने किया।

मांग की परिभाषा

वस्तु की वह मात्रा जो एक दी गई कीमत पर दिये गये समय में खरीदी जाती है, मांग कहलाती है।

हम मांग के विभिन्न घटकों को प्रदर्शित करने के लिये उपर्युक्त उदाहरणों को निम्न प्रकार अभिव्यक्त कर सकते हैं:

क्रम सं.	वस्तु का नाम	कीमत (रु. प्रति कि.ग्रा.)	मात्रा (कि.ग्रा.)	समय अवधि
1.	चावल	25	1.0	गत सप्ताह
2.	अरहर की दाल	68	0.5	गत सप्ताह
3.	गेहूँ का आटा	24	1.0	गत सप्ताह
4.	आम	50	2.0	गत सप्ताह

अतः मांग की परिभाषा में तीन घटक सम्मिलित होते हैं:

(अ) वस्तु की कीमत

(ब) वस्तु की खरीदी गई मात्रा

(स) समय अवधि

ध्यान दीजिये कि समय अवधि भिन्न-भिन्न हो सकती हैं। यह सप्ताह, मास, वर्ष आदि हो सकती है।

अतः मांग के उपर्युक्त उदाहरणों को इस प्रकार लिखा जा सकता है:

1. वर्षा ने गत सप्ताह 25 रु. प्रति कि.ग्रा. कीमत पर 1 कि.ग्रा. चावल खरीदा। यह वर्षा की चावल की मांग है।
2. वर्षा ने गत सप्ताह 50 रु. प्रति कि.ग्रा. कीमत पर 2 कि.ग्रा. आम खरीदे। यह वर्षा की आमों की मांग है तथा इसी प्रकार।

टिप्पणी

अब निम्नलिखित उदाहरणों को पढ़िये :

(i) नितिन ने पिछले महीने 2 जोड़ी जूते खरीदे।

(ii) मि. जाफरी ने 40 रु. प्रति कि.ग्रा. कीमत पर 5 कि.ग्रा. सेब खरीदे।

(iii) श्रीमती हरमीत कौर ने पिछले महीने दूध के लिये 25 रु. प्रति लीटर भुगतान किया।

क्या ये मांग के उदाहरण हैं? नहीं। आप आसानी से देख सकते हैं कि नितिन के मामले में, जूतों के एक जोड़े की कीमत नहीं दी गई है। मि. जाफरी के मामले में, समय अवधि का उल्लेख नहीं किया गया है। अन्त में श्रीमती हरमती कौर के मामले में दूध की उपभोग की गई मात्रा नहीं दी गई है।

पाठगत प्रश्न 9.1

1. मांग की परिभाषा लिखिये।

2. मांग की परिभाषा में शामिल किये जाने वाले तीन घटकों के नाम लिखिये।

9.2 मांग तथा इच्छा में अन्तर

अनेक अवसरों पर लोग इच्छा तथा मांग में भ्रमित हो जाते हैं तथा इनका प्रयोग एक दूसरे के स्थान पर करते हैं। वास्तव में, ये दो भिन्न शब्द हैं। मांग ऐसी इच्छा होती है जिसके पीछे क्रय करने की योग्यता भी हो। इससे तात्पर्य है कि यदि किसी व्यक्ति को एक वस्तु प्राप्त करने की इच्छा है, तो वह उसकी मांग कर सकता है/सकती है यदि उसके पास कीमत चुका कर खरीदने के लिये मुद्रा हो। कोई भी व्यक्ति किसी भी वस्तु अथवा सेवा की इच्छा कर सकता है। परन्तु केवल किसी वस्तु की इच्छा मात्र से ही बिना कीमत चुकाये वह उस वस्तु को प्राप्त नहीं कर सकता। यदि वस्तु की इच्छा करने वाला व्यक्ति उसकी कीमत चुका देता है तो यह उस व्यक्ति द्वारा उस वस्तु की मांग बन जाती है। उपर्युक्त उदाहरण को एक बार फिर से लें - "वर्षा ने गत सप्ताह 50 रु. प्रति कि.ग्रा. कीमत पर 2 कि.ग्रा. आम खरीदे"। यह वर्षा के द्वारा आमों की मांग है। यदि वर्षा आमों की इच्छा करती, परन्तु खरीदने के लिये यदि कीमत नहीं चुका सकती थी, तो इसे वर्षा की आमों की इच्छा कहा जाता न कि मांग।

9.3 व्यक्तिगत मांग को प्रभावित करने वाले कारक

व्यक्तिगत मांग से अभिप्राय किसी वस्तु की उस मात्रा से है जो एक उपभोक्ता प्रति इकाई समय में विभिन्न कीमतों पर खरीदने के लिये तत्पर है। लेकिन कोई व्यक्ति किसी वस्तु की कितनी मात्रा खरीदने को तत्पर है, निम्नलिखित कारकों पर निर्भर करता है। इन्हें मांग के निर्धारक भी कहते हैं। ये हैं :

(i) वस्तु की कीमत

(ii) संबंधित वस्तुओं की कीमत

(iii) क्रेता की आय

(iv) क्रेता की रूचि तथा अधिमान

आइये, अब हम इन कारकों की एक-एक करके चर्चा करें।

1. वस्तु की कीमत

जब आप कोई वस्तु खरीदने के लिये बाजार जाते हैं तो आप उस वस्तु के विक्रेता के पास जाकर सर्वप्रथम उसकी कीमत पूछते हैं। यदि आपके विचार से कीमत उचित है तो आप उस वस्तु की आवश्यक मात्रा खरीद लेते हैं। दूसरी ओर, यदि आपकी दृष्टि में कीमत अधिक है तो आप उस वस्तु को या तो खरीदते ही नहीं हैं अथवा उसकी कम मात्रा खरीदते हैं। सामान्यतः हम किसी वस्तु की कम कीमत पर अधिक तथा अधिक कीमत पर उसकी कम मात्रा खरीदने के लिये तत्पर होते हैं, यदि मांग को प्रभावित करने वाले अन्य सभी कारकों में कोई परिवर्तन न हो।

2. संबंधित वस्तुओं की कीमत

किसी वस्तु की मांग उसकी संबंधित वस्तुओं की कीमत द्वारा भी प्रभावित होती है। संबंधित वस्तुएं दो प्रकार की हो सकती हैंः (अ) स्थानापन्न वस्तुएं तथा (ब) पूरक वस्तुएं

स्थानापन्न वस्तुएं वे वस्तुएं होती हैं जो एक दूसरे के स्थान पर आसानी से प्रयोग की जा सकती हैं। स्थानापन्न वस्तुओं के उदाहरण हैं - कोक तथा पेप्सी, चाय तथा काफी आदि। यदि काफी की कीमत में वृद्धि हो जाती है तो लोग काफी की मांग कम करेंगे और इसलिये चाय की मांग में वृद्धि हो जायेगी। यदि काफी की कीमत में कमी हो जाये तो लोग काफी की मांग अधिक करेंगे और इस प्रकार चाय की मांग कम हो जाएगी। अतः किसी वस्तु की मांग उसकी स्थानापन्न वस्तुओं की कीमतों से प्रत्यक्ष रूप से संबंधित होती है।

दूसरी ओर, **पूरक वस्तुएं वे वस्तुएं होती हैं जो किसी विशेष आवश्यकता की संतुष्टि करने में साथ-साथ प्रयोग की जाती हैं।** पूरक वस्तुओं के उदाहरण हैं - कार तथा पेट्रोल, बाल पैन तथा रिफिल आदि। कल्पना कीजिये, यदि हमारे पास कार है तो उसे चलाने के लिये हमें पेट्रोल भी चाहिये। कल्पना कीजिए यदि पेट्रोल की कीमत में वृद्धि हो जाए तो कार की मांग पर इसका क्या प्रभाव पड़ेगा? कार की मांग कम हो जाएगी। यदि इनमें से किसी एक वस्तु की कीमत में वृद्धि होती है तो दूसरी वस्तु की मांग कम हो जाएगी। यदि इनमें से किसी एक वस्तु की कीमत में कमी होती है तो दूसरी वस्तु की मांग में वृद्धि हो जाएगी। अतः किसी वस्तु की मांग तथा उसकी पूरक वस्तुओं की कीमत में विपरीत संबंध होता है।

टिप्पणी

3. क्रेता की आय

किसी वस्तु की मांग क्रेता की आय पर भी निर्भर करती है। जब आपकी आय में वृद्धि हो जाती है तो आप कुछ वस्तुओं जैसे फल, पूर्ण मलाई युक्त दूध, मक्खन आदि पर अधिक खर्च करना चाहेंगे। ऐसी वस्तुओं को **सामान्य वस्तुएं** कहते हैं। सामान्य वस्तुए वे वस्तुएं हैं जिनकी मांग आय बढ़ने पर बढ़ती है। अतः सामान्य वस्तुओं की मांग क्रेता की आय से प्रत्यक्ष रूप से संबंधित होती है।

लेकिन कुछ वस्तुएं ऐसी भी होती हैं जिनकी मांग क्रेता की आय बढ़ने पर कम हो जाती है, जैसे ज्वार, बाजरा, टोन्ड दूध आदि। इन वस्तुओं को **निकृष्ट वस्तुएं** कहते हैं। क्रेता की आय तथा निकृष्ट वस्तुओं की मांग में विपरीत संबंध पाया जाता है।

4. रूचि, वरीयता तथा फैशन

किसी वस्तु की मांग को प्रभावित करने में रूचि, वरीयता तथा फैशन महत्वपूर्ण कारक हैं। उदाहरणार्थ, यदि मोनिका सलवार और कमीज की तुलना में जीन्स तथा टाप को श्रेष्ठ मानती है तो उसकी जीन्स तथा टाप के लिये मांग बढ़ जायेगी। अतः उन वस्तुओं की मांग में वृद्धि हो जाती हैं जिनको क्रेता श्रेष्ठ समझता है अथवा जो फैशन में हैं। दूसरी ओर, उन वस्तुओं की मांग में कमी आती है जिनको क्रेता श्रेष्ठ नहीं समझता अथवा जो फैशन में नहीं है।

9.4 व्यक्तिगत मांग अनुसूची

प्रत्येक व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं की संतुष्टि के लिये कुछ वस्तुओं और सेवाओं की मांग करता है। उपर्युक्त उदाहरण में हमनें एक सप्ताह में वर्षा की चावल, दाल, गेहूँ का आटा तथा आमों की मांग के बारे में चर्चा की। वर्षा की खरीदारी वहीं समाप्त नहीं हो जायेगी। जब भी कभी उसे इन वस्तुओं की आवश्यकता होगी वह इनकी दोबारा खरीदारी करेगी। अगली बार बाजार जाने पर वह इन वस्तुओं की इतनी ही मात्रा में खरीदारी करेगी अथवा नहीं, यह इस बात पर निर्भर करता है कि वस्तुओं की कीमतें समान ही रही हैं अथवा नहीं। उसके द्वारा उस समय अवधि में एक वस्तु की मांग का विश्लेषण करने के लिये आइये, हम उसके द्वारा केवल एक वस्तु जैसे आम की खरीदारी पर विचार करे। हम यह भी विचार करें कि अन्य वस्तुओं की कीमतें, वर्षा की जेब में मुद्रा तथा उसकी रूचि में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। इस समय अवधि में वर्षा द्वारा आमों की खरीदारी को देखने पर हमें निम्न बातों का पता चलता है।

यदि आमों की कीमत 50 रु. प्रति कि.ग्रा. है तो वर्षा एक सप्ताह के लिये 2 कि.ग्रा. आम खरीदती है। यदि आमों की कीमत बढ़कर 60 रु. प्रति कि.ग्रा. हो जाती है तो वह एक सप्ताह के लिये केवल 1.5 कि.ग्रा. आम खरीदती है। यदि कीमत घटकर 40 रु. प्रति कि.ग्रा. हो जाती है तो वह अधिक अर्थात एक सप्ताह के लिये 2.5 कि.ग्रा. आम खरीदने को तत्पर है। इससे अभिप्राय है, यदि कीमत 50 रु. प्रति कि.ग्रा. है तो वर्षा की आमों की मांग 2 कि.ग्रा. प्रति सप्ताह है, 60 रु. प्रति कि.ग्रा. कीमत पर उसकी मांग केवल 1.5 कि.ग्रा. प्रति सप्ताह है तथा 40 रु. प्रति कि.ग्रा. कीमत पर उसकी मांग 2.5 कि.ग्रा. प्रति सप्ताह है। इसे हम निम्न सारणी 9.1 में प्रस्तुत कर सकते हैं।

सारणी 9.1 वर्षा की आमों की मांग

आमों की कीमत (रु. प्रति कि.ग्रा.)	आमों की मांगी गई मात्रा प्रति सप्ताह (कि.ग्रा. में)
80	0.5
70	1.0
60	1.5
50	2.0
40	2.5
30	3

सारणी 9.1 में विभिन्न कीमतों पर प्रति सप्ताह वर्षा द्वारा आमों की मांगी गई विभिन्न मात्राओं को दर्शाया गया है। विभिन्न कीमतों पर किसी वस्तु की मांगी गई विभिन्न मात्राओं को इस प्रकार सारणी द्वारा प्रस्तुतीकरण को व्यक्तिगत मांग अनुसूची कहते हैं। एक व्यक्तिगत क्रेता द्वारा किसी वस्तु की मांग को व्यक्तिगत मांग कहते हैं। व्यक्तिगत मांग किसी वस्तु की वह मात्रा है जो एक व्यक्तिगत क्रेता विभिन्न कीमतों पर प्रति इकाई समय में खरीदने को तत्पर है।

9.5 मांग का नियम

मांग का नियम कीमत तथा मांग की मात्रा के बीच सम्बन्ध को व्यक्त करता है, जब वस्तु की कीमत के अतिरिक्त अन्य सभी कारक अपरिवर्तित रहते हैं।

जैसा कि इस पाठ में पहले चर्चा की जा चुकी है कि किसी वस्तु की मांग अनेक कारकों द्वारा प्रभावित होती है जैसे वस्तु की कीमत, संबंधित वस्तुओं की कीमत, क्रेता की आय, रूचि, वरीयता तथा फैशन आदि। इसलिये यह मानते हुए कि अन्य सभी कारक जैसे संबंधित वस्तुओं की कीमत, क्रेता की आय, रूचि, वरीयता तथा फैशन स्थिर हें, मांग का नियम वस्तु की कीमत में परिवर्तन होने पर उसकी मांग की मात्रा पर होने वाले प्रभाव को व्यक्त करता है।

मांग का नियम है, **"अन्य कारक स्थिर रहने पर, यदि किसी वस्तु की कीमत में कमी होती है तो उसकी मांग की मात्रा में वृद्धि होती है तथा यदि कीमत में वृद्धि होती है तो उसकी मांग की मात्रा में कमी हो जाती है।"**

मांग के नियम से अभिप्राय है, मांग को निर्धारित करने वाले अन्य कारकों के स्थिर रहने पर, किसी वस्तु की कीमत तथा उसकी मांग की मात्रा में विपरीत संबंध होता है।

9.6 व्यक्तिगत मांग वक्र

जब वस्तु की कीमत तथा मांग की मात्रा के उपरोक्त संबंध को चित्र के रूप में प्रस्तुत किया जाता है तो इसे मांग वक्र कहते हैं। इस प्रकार मांग वक्र मांग के नियम की चित्रात्मक प्रस्तुति है। मांग वक्र विभिन्न कीमतों पर किसी वस्तु की विभिन्न मात्राओं को चित्र के रूप में प्रदर्शित करता है।

सारणी 9.1 की सहायता से हम वर्षा की आमों की मांग (व्यक्तिगत मांग वक्र) की रचना कर सकते हैं। मांग वक्र चित्र 9.1 में देखें।

आमों की मांग की मात्रा X-अक्ष पर तथा आमों की कीमत Y-अक्ष पर लें। Y-अक्ष (ऊर्ध्वाधर) पर 30 रु. से आरम्भ होकर 80 रु. तक कीमतों को अंकित किया गया है। X-अक्ष (क्षैतिज) पर 0.5 से 3 कि.ग्रा. तक आमों की मात्रा को अंकित किया गया है। 80 रु. पर वर्षा ने 0.5 कि.ग्रा. आमों की मांग की है। चित्र 9.1 में दिये गये ग्राफ में इस संयोग को बिन्दु A द्वारा प्रदर्शित किया गया है। इसी प्रकार, सारणी 9.1 में दिये गये आमों की कीमत तथा मात्राओं के अन्य संयोगों को B, C, D, E तथा F बिन्दुओं द्वारा प्रदर्शित किया गया है। इन बिन्दुओं को मिलाकर वर्षा के आमों के मांग वक्र की रचना की गई है।

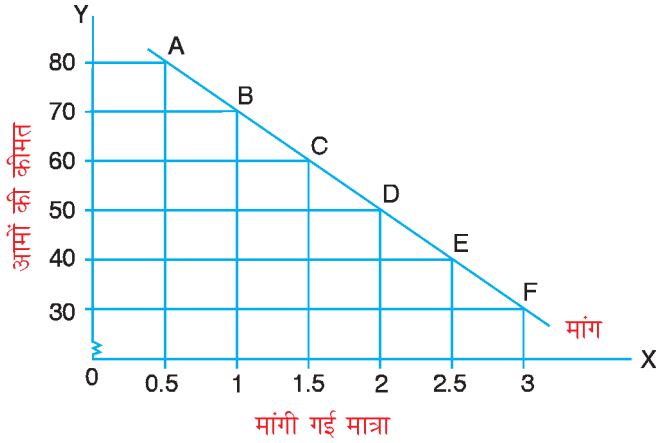

चित्र 9.1 व्यक्तिगत मांग वक्र

इस प्रकार, मांग अनुसूची तथा मांग वक्र दोनों ही वस्तु की कीमत तथा मांग की मात्रा के बीच उसी संबंध का वर्णन करते हैं, परन्तु मांग अनुसूची इसे सारणी के रूप में तथा मांग वक्र चित्र के रूप में वर्णन करता है।

पाठगत प्रश्न 9.2

1. मांग के नियम का उल्लेख कीजिये।
2. मांग के नियम की मान्यताएं क्या हैं?

3. यह मानते हुए कि आपकी आय, रूचि, अधिमान तथा फैशन आदि पूर्ववत रहते हैं तो आपकी सेबों के लिये मांग पर क्या प्रभाव पड़ेगा यदि सेबों की कीमत 80 रु. प्रति कि.ग्रा. से बढ़कर 100 रु. प्रति कि.ग्रा. हो जाती है।

9.7 व्यक्तिगत मांग वक्र की आकृति

मांग के नियम के अनुसार, जब मांग को प्रभावित करने वाले अन्य सभी कारक स्थिर रहते हैं तो क्रेता कम कीमत पर किसी वस्तु की अधिक तथा अधिक कीमत पर उसकी कम मात्रा खरीदता है। **कीमत तथा मांग की मात्रा में इस विपरीत संबंध के कारण मांग वक्र बायें से दायें नीचे की ओर ढालू होता है।** लेकिन प्रश्न उठता है कि क्रेता कम कीमत पर वस्तु की अधिक तथा अधिक कीमत पर कम मात्रा क्यों खरीदता है? दूसरे शब्दों में मांग वक्र बायें से दाये नीचे की ओर ढालू क्यों होता है? कीमत तथा मांग की मात्रा में विपरीत संबंध होने के कुछ महत्वपूर्ण कारणों का यहां उल्लेख किया गया हैं।

1. जब किसी वस्तु की अधिकाधिक इकाइयों का उपभोग किया जाता है तो वस्तु की अगली इकाइयों से मिलने वाली संतुष्टि कम होती जाती है। उदाहरण के लिये, एक भूखे व्यक्ति को पहली चपाती से अधिकतम संतुष्टि प्राप्त होती है, दूसरी चपाती से कम तथा तीसरी चपाती से और भी कम संतुष्टि उसे प्राप्त हाती है तथा इसी प्रकार। यदि उसे अधिक संतुष्टि प्राप्त होती हे तो वह उसके लिये अधिक तथा यदि कम संतुष्टि प्राप्त होती है तो वह उसके लिये कम कीमत देने को तैयार होगा। इससे अभिप्राय है कि वह कम कीमत पर वस्तु की अधिक और अधिक कीमत पर उसकी कम मात्रा का क्रय करने को तत्पर होगा। मांग का नियम भी इसी बात को व्यक्त करता है जिसके कारण मांग वक्र नीचे की ओर ढालू होता है।

2. मान लीजिये, आप बाजार से आम खरीदते हैं। यदि आम की कीमत 40 रु. प्रति कि.ग्रा. है ओर आप इस कीमत पर 2 कि.ग्रा. आम खरीदते हैं। यदि आम की कीमत 40 रु. प्रति कि.ग्रा. से घटकर 20 रु. प्रति कि.ग्रा. हो जाये तो आपकी वास्तविक आय अथवा क्रय शक्ति दोगुनी हो जाती है और अब उतनी ही मौद्रिक आय में आप दोगुनी मात्रा अर्थात 4 कि.ग्रा. आम खरीद सकते हैं। अतः एक क्रेता कीमत कम होने पर किसी वस्तु की अधिक और कीमत बढ़ने पर उसकी कम मात्रा खरीद सकता है जिसके कारण मांग वक्र नीचे की ओर ढालू होता है।

3. जब किसी वस्तु की कीमत कम हो जाती है तो वह अपनी स्थानापन्न वस्तुओं की तुलना में अपेक्षाकृत सस्ती हो जाती है। (यद्यपि स्थानापन्न वस्तुओं की कीमत अपरिवर्तित रहती है)। उदाहरण के लिये, यदि कोक की कीमत कम हो जाती है

तो वह अपनी स्थानापन्न पैप्सी की तुलना में अपेक्षाकृत सस्ती हो जाती है। लोग पैप्सी के स्थान पर कोक खरीदना आरम्भ कर देते हैं। दूसरे शब्दों में पैप्सी को कोक द्वारा प्रतिस्थापित कर दिया जाता है), इससे कोक की कीमत कम होने पर उसकी मांग बढ़ जाती है। दूसरी ओर जब वस्तु की कीमत बढ़ जाती है तो उसकी मांग कम हो जायेगी। इसके कारण मांग वक्र नीचे की ओर ढालू होगा।

पाठगत प्रश्न 9.3

1. यदि किसी वस्तु की कीमत कम हो जाये तो उसके क्रेता की वास्तविक आय पर क्या प्रभाव पड़ेगा?

2. जब कीमत तथा उसकी मांग की मात्रा में विपरीत संबंध है तो मांग वक्र का ढ़ाल कैसा होगा?

3. आपको प्यास लगी है और आप पहले ही एक गिलास पानी पी चुके हैं। दूसरा गिलास पानी पीने पर उससे मिलने वाली संतुष्टि बढ़ेगी अथवा घटेगी?

4. निम्नलिखित आंकड़ों की सहायता से मांग वक्र बनाइये

कीमत (रु. प्रति इकाई)	1	2	3	4	5
मांग की मात्रा (इकाइयों में)	20	16	12	8	4

9.8 वस्तु की बाजार मांग

केवल वर्षा ही बाजार में आमों की क्रेता नहीं है अपितु कुछ अन्य व्यक्ति भी बाजार में आमों की मांग कर सकते हैं। मान लीजिये, दो अन्य क्रेता विभा और सौम्या बाजार में आमों का क्रय करने के लिये तत्पर हैं।

किसी वस्तु की बाजार में सभी व्यक्तिगत क्रेताओं द्वारा दी गई कीमत पर दिये गये समय में मांगी जाने वाली कुल मात्रा उस वस्तु की बाजार मांग कहलाती है।

मान लीजिये, बाजार में आम खरीदने वाले वर्षा, विभा और सौम्या केवल तीन ही क्रेता हैं तो बाजार मांग इन तीनों क्रेताओं की व्यक्तिगत मांग अनुसूचियों का योग होगी। अब यदि सारणी 9.1 में हम वर्षा की मांग के साथ विभा तथा सौम्या की मांग को प्रदर्शित करने वाले दो अन्य स्तम्भों को जोड़ दें तो हमें बाजार मांग अनुसूची प्राप्त हो सकती है। इसे निम्न सारणी 9.2 में प्रदर्शित किया गया है।

सारणी 9.2 आमों की बाजार मांग

आमों की कीमत (रु. प्रति कि.ग्रा.)	आमों की मांगी गई मात्रा प्रति सप्ताह (कि.ग्रा. में)			आमों की बाजार मांग प्रति सप्ताह (कि.ग्रा. में)
	वर्षा	विभा	सौम्या	
80	0.5	1.0	0	1.5
70	1.0	1.5	0.5	3.0
60	1.5	2.0	1.0	4.5
50	2.0	2.5	1.5	6.0
40	2.5	3.0	2.0	7.5
30	3	3.5	2.5	9.0

जब आमों की कीमत 80 रु. प्रति कि.ग्रा. है तो वर्षा 0.5 कि.ग्रा. विभा 1.0 कि.ग्रा. आमों की मांग करती है तथा सौम्या इस कीमत पर आमों की कोई मांग नहीं करती। इस प्रकार 80 रु. प्रति कि.ग्रा. कीमत पर आमों की बाजार मांग 0.5 + 1.0 + 0 = 1.5 कि.ग्रा. प्रति सप्ताह है। इसी प्रकार अन्य कीमतों पर भी आमों की बाजार मांग ज्ञात की जा सकती है जैसा कि सारणी 9.2 में प्रदर्शित किया गया है।

पाठगत प्रश्न 9.4

1. यदि बाजार में किसी वस्तु के खरीदने वाले केवल तीन परिवार हैं तो निम्न सारणी में बाजार मांग ज्ञात कीजिये।

कीमत (रु. प्रति इकाई)	मांग की मात्रा (इकाइओं में)			बाजार मांग (इकाइओं में)
	परिवार अ	परिवार ब	परिवार स	
5	15	13	30	–
6	12	11	25	–
7	9	9	20	–
8	6	7	15	–
9	3	5	10	–

2. निम्न सारणी को पूरा कीजियेः

कीमत (रु. प्रति इकाई)	मांगी गई मात्रा (इकाइयों में)			बराबर मांग (इकाइयों में)
	परिवार अ	परिवार ब	परिवार स	
1	10	18	–	48
2	8	15	–	40
3	6	12	–	32
4	4	9	–	24
5	2	6	–	16

9.9 बाजार मांग को प्रभावित करने वाले कारक

जैसा कि पहले कहा गया है कि बाजार मांग किसी वस्तु की वह कुल मात्रा है जो बाजार में सभी व्यक्तिगत क्रेता प्रति इकाई समय में विभिन्न कीमतों पर खरीदने के लिये तत्पर हैं। किसी वस्तु की व्यक्तिगत मांग को प्रभावित करने वाले कारकों के अतिरिक्त बाजार मांग को निम्नलिखित कारक भी प्रभावित करते हैंः

1. **क्रेताओं की संख्या :** किसी वस्तु के क्रेताओं की संख्या बाजार में उस वस्तु की मांग को निर्धारित करती है। जैसा कि आपने आमों की बाजार मांग को प्रदर्शित करने वाली सारणी 9.2 में देखा है कि बाजार में आमों की मांग करने वाले तीन क्रेता वर्षा, विभा तथा सौम्या थे। अब यदि एक और क्रेता आभा भी आम खरीदना आरंभ कर देती है तो आमों की बाजार मांग पर क्या प्रभाव पड़ेगा? आमों की बाजार मांग में अवश्य ही वृद्धि हो जायेगी। अतः यदि किसी वस्तु के क्रेताओं की संख्या अधिक है तो उस वस्तु की बाजार मांग भी अधिक होगी। दूसरी ओर, यदि क्रेताओं की संख्या कम है तो वस्तु की बाजार मांग भी कम होगी।

2. **आय और सम्पत्ति का वितरण :** समाज में आय और सम्पत्ति का वितरण भी किसी वस्तु की बाजार मांग को निर्धारित करता है। यदि आय और सम्पत्ति का वितरण धनी लोगों के अधिक पक्ष में है तो धनी लोगों द्वारा पसंद की जाने वाली वस्तुओं की मांग अधिक होने की संभावना है। दूसरी ओर, यदि आय और सम्पत्ति का वितरण निर्धन व्यक्तियों के अधिक पक्ष में है तो निर्धन व्यक्तियों द्वारा पसंद की जाने वाली वस्तुओं की मांग अधिक होने की संभावना है।

3. **मौसम :** सामान्यतः यह देखा जाता है कि गर्मी के मौसम में बर्फ की मांग बढ़ जाती है। इसी प्रकार वर्षा ऋतु में छातों और बरसातियों की मांग बढ़ जाती है

तथा सर्दियों के मौसम में ऊनी वस्त्रों की मांग में वृद्धि हो जाती है। अतः किसी वस्तु की बाजार मांग मौसम से भी प्रभवित होती है।

पाठगत प्रश्न 9.5

1. किसी वस्तु की व्यक्तिगत मांग को प्रभावित करने वाले किन्हीं चार कारकों के नाम लिखिये।
2. यदि चीनी की कीमत में वृद्धि हो जाये तो चाय की मांग पर क्या प्रभाव पड़ेगा?
3. यदि पैप्सी की कीमत कम हो जाये तो कोक की मांग पर क्या प्रभाव पड़ेगा?
4. सामान्य वस्तुओं तथा निकृष्ट वस्तुओं में भेद कीजिये।
5. ऐसी कम से कम पांच वस्तुओं की एक सूची बनाइये जो आजकल फैशन में हैं।
6. उपयुक्त शब्दों द्वारा रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजियेः
   (i) यदि क्रेता की आय में कमी हो जाती है तो निकृष्ट वस्तुओं की मांग में ..... हो जाती है
   (ii) जब स्याही की कीमत में वृद्धि होती है तो फाउन्टेन पैन की मांग में ..... हो जायेगी।
   (iii) बाजार में किसी वस्तु के क्रेताओं की संख्या ..... होने पर उस वस्तु की मांग अधिक होगी।
   (iv) यदि आय और सम्पत्ति का वितरण ..... के पक्ष में अधिक है तो निर्धन व्यक्तियों द्वारा प्रयोग की जाने वाली वस्तुओं की मांग अधिक होगी।

आपने क्या सीखा

- किसी वस्तु की मांग से अभिप्राय वस्तु की उस मात्रा से है, जो क्रेता दी गई कीमत पर दिये गये समय में खरीदने के लिये तत्पर है।
- व्यक्तिगत मांग, किसी वस्तु की वह मात्रा है जो एक व्यक्तिगत क्रेता दी गई कीमत पर दिये गये समय में खरीदने के लिये तत्पर है।
- बाजार मांग किसी वस्तु की वह कुल मात्रा है जो बाजार में सभी व्यक्तिगत उपभोक्ता दी गई कीमत पर दिये गये समय में खरीदने को तत्पर हैं।
- व्यक्तिगत मांग के निर्धारक हैं - वस्तु की कीमत, संबंधित वस्तुओं की कीमत, क्रेता की आय, रूचि, वरीयता तथा फैशन।

टिप्पणी

- बाजार मांग के निर्धारक हैं - व्यक्तिगत मांग के निर्धारकों के अतिरिक्त वस्तु को खरीदने वाले क्रेताओं की संख्या, आय तथा सम्पत्ति का वितरण तथा मौसम।
- मांग के नियम के अनुसार यदि मांग को निर्धारित करने वाले अन्य सभी कारक पूर्ववत रहें तो क्रेता किसी वस्तु की कम कीमत पर अधिक और अधिक कीमत पर उसकी कम मात्रा खरीदेंगे।
- मांग वक्र मांग के नियम का चित्र के रूप में प्रस्तुति है।
- किसी वस्तु का मांग वक्र बायें से दायें नीचे की ओर ढालू होता है।

पाठान्त प्रश्न

1. मांग की परिभाषा लिखिये। व्यक्तिगत मांग तथा बाजार मांग में भेद कीजिये।
2. व्यक्तिगत मांग के निर्धारकों की संक्षेप में व्याख्या कीजिये।
3. उन कारकों का उल्लेख कीजिये जो किसी वस्तु की बाजार मांग को प्रभावित करते हैं।
4. एक काल्पनिक संख्यात्मक उदारहण/अनुसूची द्वारा मांग के नियम का उल्लेख कीजिये तथा उसकी व्याख्या कीजिये।
5. मांग वक्र क्या होता है? एक काल्पनिक मांग अनुसूची की सहायता से एक व्यक्तिगत मांग वक्र बनाइये।
6. मांग वक्र बायें से दायें नीचे की ओर ढालू क्यों होता है?
7. मांग के नियम के क्या कारण हैं?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

पाठगत प्रश्न 9.1

1. मांग से अभिप्राय वस्तु की उस मात्रा से है जो क्रेता प्रति इकाई समय में विभिन्न कीमतों पर खरीदने के लिये तत्पर है।
2. (i) वस्तु की कीमत

   (ii) वस्तु की खरीदी जाने वाली मात्रा

   (iii) समय अवधि

पाठगत प्रश्न 9.2

1. मांग के नियम के अनुसार मांग को प्रभावित करने वाले अन्य सभी कारकों के स्थिर रहने पर, किसी वस्तु की कीमत तथा उसकी मांग की मात्रा में विपरीत संबंध होता है।
2. (i) क्रेता की आय में परिवर्तन नहीं होता।

   (ii) संबंधित वस्तुओं की कीमत में परिवर्तन नहीं होता।

   (iii) रूचि, वरीयता तथा फैशन में परिवर्तन नहीं होता।
3. सेबों की मांग कम हो जायेगी।

पाठगत प्रश्न 9.3

1. क्रेता की वास्तविक आय बढ़ जायेगी।
2. मांग वक्र बायें से दायें ढालू होगा।
3. घटेगी

पाठगत प्रश्न 9.4

1. 58, 48, 38, 28, 18
2. 20, 17, 14, 11, 8

पाठगत प्रश्न 9.5

1. वस्तु की कीमत, संबंधित वस्तुओं की कीमत, क्रेता की आय, रूचि, वरीयता तथा फैशन
2. कम हो जायेगी
3. कम हो जायेगी
4. आय में वृद्धि होने पर सामान्य वस्तुओं की मांग में वृद्धि हो जाती है जबकि क्रेता की आय में वृद्धि होने पर निकृष्ट वस्तुओं की मांग में कमी हो जाती है।
5. जीन्स, टॉप, इलेक्ट्रॉनिक घड़ियां, बाल पैन, मोबाइल फोन
6. (i) वृद्धि (ii) कमी (iii) बढ़ने पर (iv) निर्धन व्यक्ति